IJAER/ December-January 2013/Volume-2/Issue-1 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

दूसरा सप्तक और शमशेर बहादुर की कविताएं

डॉ. लोकेश कुमार शर्मा

व्याख्याता (हिन्दी साहित्य)

राजकीय महाविद्यालय टोंक (राज.)

सार

हिन्दी के आकर्षक और बहुपठित कवि होने के बावजूद शमशेर एक ऐसे कवि हैं, जिन पर लिखा कम गया है, अपेक्षाकृत उनके समकालीन अन्य कवियों पर थोड़ा ज़्यादा बात हुई है। अब, ऐसा भी हो सकता है कि शमशेर की काव्यात्मक ऐन्द्रजालिकता इसका कारण रही हो। बरहहाल, हिन्दी की नयी कविता को समझने के प्रयासों में जो आलोचकीय व्यग्रताएँ काम करती हैं, वे किसी भी कवि के बारे में वातावरण और वैचारिकता जैसी चीज़ों को काफी पहले ही तय कर लेने के आग्रह से पोषित होती हैं। वहीं, शमशेर के साथ ऐसा करना थोड़ा मुश्किल काम है, उनकी कविता को पढ़ते हुए आप अपने मस्तिष्क में जैसे ही उनके कोई फ्रेम तैयार करेंगे, कविता की अगली पंक्ति उस फ्रेम का विध्वंस करती नज़र आयेगी। यदि काव्यानुभव को केन्द्र में रखें तो यह बात काफी हद तक मार्के की है, कि शमशेर को पढ़ना उनकी भाषा की नाव पर बैठ कर एक तरल यात्रा करने की तरह है। एक ऐसी यात्रा जो यह तो नहीं बताती कि हमें ठीक–ठीक कहाँ पहुँचना है, किन्तु उस यात्रा के अनुभव अतीन्द्रिय होते हैं। शमशेर को एक इम्प्रेशनिस्ट, एक प्रणयवादी, एक सामासिक, एक उत्तरछायावादी, एक ऐन्द्रजालिक या आकर्षक कवि के रूप में याद करने के साथ–साथ कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण है अकेलेपन में डूबे एक ईमानदार कवि के रूप में याद करना।

कीवर्ड : *दूसरा सप्तक* , *शमशेर बहादुर*

प्रस्तावना

ऐतिहासिक परिदृष्य को दृष्टव्य करते हुए कह सकते हैं कि 'निराला' ऐसे कवि हैं, जो जनता से सीधे जुड़े रहे हैं। इन्होंने एक ओर छायावाद की दीवार को तोड़कर भारतीय काव्य की महानता को आत्मसात किया, तो दूसरी ओर लोकवादी तत्वों से अपनी कविता को संपृक्त किया। इसके साथ ही वे कविता में जीवनवादी मूल्यों को स्थापित करने का भी काम कर रहे थे। इस संदर्भ में आचार्य षुक्ल कहते हैं कि उत्कृष्ट काव्य मूल्यों की परिणति निराला की कविताओं में सहज रूप से प्राप्त होती है। 1950 के दौर में कविता में एक हलचल आयी। 'कविता' में 'नये' विष`षण लगाकर कविता को लिखना और पहचानना। लोगों का मंतव्य है कि इसके अगुवा 'अज्ञेय' नहीं 'निराला' हैं। 'निराला' की कविताओं मे समाज का वास्तविक रूप मिलता है।'तोडती पत्थर', 'कुकुरमुत्ता' व 'भिक्षुक' इनकी कविताएं समाज का वास्तविक रूप प्रस्तुत करती हैं। 'कुकुरमुत्ता' तो षोषण–षोषित वर्ग पर आधारित है। जब कि 'राम की शक्ति पूजा' व 'तुलसीदास' सांस्कतिक दस्तावेज प्रस्तुत करती है।

'नयी कविता' के षुरू आती दौर में अज्ञेय, गिरीजा कुमार माथुर, भारत भूषण अग्रवाल, केदारनाथ अग्रवाल, नेमिचन्द्र जैन, प्रभाकर माचवे, मुक्तिबोध आदि कवियो ने जनवादी एवं यथार्थवादी दष्टि से प्रभावित होकर कविताओं का प्रणयन किया। नैमिचन्द्र जैन व भारतभूषण अग्रवाल छायावाद से प्रभावित होकर कविताओं का सृजन करते थे। तो क`दारनाथ अग्रवाल

'निराला' के ढर्रे पर कविता करते थे। ''सन 1943–44 में पंत के दार–नरेन्द्र–षमषेर कविता की जिस धारा के प्रतिनिधि है 'तार सप्तक' उसमें प्रवाह की लहर है, नदी का स्थिर द्वीप नहीं।''1 प्रगतिवादी–प्रयोगवादी कवि 'नयी कविता' के कवि हैं। इन्होंने पुरानी धारा क` कविता में परिवर्तन लाकर 'नयी कविता' का नामकरण किया। इसके सन्दर्भ में प्रभाकर माचवे कहते हैं कि, ''नयी कविता पुरानी कविता से अनेक बातों में इतनी भिन्न है कि उसको पहली दृष्टि में ही सहजभाव से पहचान कर लेना सरल है। पुरानी कविता क`वल भाव, विभाव व अनुभाव को रस का संस्कार देकर आकर्षक और सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की परम्परा नहीं है। इसके विपरीत नयी कविता में संबंधो के मूल कारणों का भी अनुसंधान करने की प्रवृत्ति है। फलतः नयी कविता में आलोचना, हास्य व व्यंग्य के तत्व भी पुष्कल रूप में विनिर्युक्त हैं।''2

शमशेर की काव्य– दृष्टि

कविता एक माध्यम होती है कि वह अन्तर्वस्तु को अभिव्यक्त करने की तथा जीवन के अनुभव–अहसास को संप्रेषित करने की शक्ति रखती है। इसके सन्दर्भ में शमषेर कहते है कि ''सार्थक अर्न्तदृष्टि के सन्दर्भ में यह कहा गया था कि इसे यथार्थपरक होना चाहिए। आज यह तो सभी मानते हैं कि यथार्थवादी लेखन का युग है। लेखन को लेकर ज्यादातर भ्रम व कुहासे छट गये है ं। किन्तु यथार्थ को लेकर अनेक भ्रम आज के बहुत से कवियों में पाये जाते हैं। बहुत से लोगों की मान्यता है कि यथार्थ के कुछ तत्वों पर विचार इसलिए यहां आवष्यक होता है। बहुत से लोगा ं की मान्यता है कि यथार्थ से रूमानीपन का विरोध होता है।.... किन्तु इसके लिए यह बताना अनिवार्य है कि चीजें है। अर्थात वस्तुगत यथार्थ है।.... प्रयोगवादी कवियों की उद्घोषणा के साथ नयी कविता का नारा बुलन्द करने वाले नये कवि और नयी कविता के प्रवक्ता काफी जोष में थे। अज्ञेय इसका नेतृत्व कर रहे थे।

और उनके अनुयायी प्रगतिषील–प्रयोगवादी कवियों को अपना शत्रु समझने लगे थे। 'दिनकर' ने भी उसकी धारा से अपने को जोड़ और कहा मैं प्रगतिवाद का अगुवा नहीं पिछलग्गू कवि हूं। हिन्दी कविता का आकाष बदल रहा है। जो नये क्षितिज सामने चमक रहा है, उसकी ओर खड़ा होकर मैं स्वागत में 'नील कुसुम बिखेरता हूं।''3 नयी कविता के विविध पहुलुओं को कवियों और आलोचकों ने व्याख्यायित किया है। इसके परिप्रेक्ष्य में शमषेर कहते हैं ''कि अव्वल तो शायद यह निर्देषित कर देना जरूरी या मुनासिब हो कि मेरी कविता खड़ी बोली में कुछ हद तक नहीं हो सकती है। मगर मसलन अंग्र`जी में उसका नयापन अगर बहुत पुराना नहीं, तो कुछ न क ुछ पुराना कमजकम ख़ासी अच्छी तरह जाना पहचाना व जरूर माना जायेगा। और, यह कि इसके बहुत र ंग–रूप निराला में भी षुरू देखता हूं। अज्ञेय को जिन्होंने ध्यान से पढ़ा होगा या मुक्तिबोध को भी, वह इससे बहुत न चौके ंगे। शहर क` मध्यवर्ती आधुनिक पाठक तो और भी कम खैर।''4

नयी कविता में एक ओर सामाजिक–राजनैतिक अवेगोन्मेष है तो दूसरी तरफ नारी के यथार्थरूप को प्रस्तुत किया गया है। स्वतंत्रता के पूर्व व स्वतंत्रता के बाद की कविता नयी कविता है। इसमें वैचारिक अन्तर के साथ–साथ व्यवहारिक विभिन्नता भी है। 'पूर्व' की कविता में प्रयोग–प्रगति की ध्वनि व्यंजना हुई है। तो 'पर' की कविता में समाज को नया रूप देने की इच्छा है। प्रयोगवाद से अलग हुई नयी कविता रूढ़िवादिता, राजनैतिक, विद्रुपता और सांस्कतिक–कुरूपता के चित्रण की ओर उन्मुख हुई। उसमें आड़म्बर नीरस–जीवन, नकली मुखौटों का अंकन राजनैतिक–कुट, दावं–पेच, सूदखोरों, मुनाफाखोरों और सरमायेदारों के विरुद्ध विद्रोह तथा ग्रामीण चेतना और आख्या की अभिव्यक्ति थी। ''सन 1957 से पहले वाले स्वातंत्र्योत्तर प्रथम दषक में कविता के क्षेत्र में नयी जमीन की तलाष आत्मान्वेषण वाली प्रवृत्ति का रूपान्तर थी।'

नयी कविता की सबसे बड़ी ख़ासियत है कि इसमें सामजिक– राजनैतिक जनवाद की गहरी पैठ है, इसके साथ ही रूपाकारों की खोज है। नयी कविता मानव और मानवजाति के संबंधो की तलाष तथा पुराने को नया रूप देने की

महती भूमिका अदात करती है। श्रीकांत वर्मा ने कवि समूह के विरूद्ध व्यक्तिक मूलक को प्रस्तुत करते हैं। तो शमशेर ने वैयक्तिकता को ही प्रधानता दी है। निरी वैयक्तिकता को नहीं व्यक्तिवाद को। इस सन्दर्भ में डॉ. रामविलास षर्मा कहते हैं कि '' शमशेर का आत्मसंघर्ष उनके मार्क्सवादी विवेक और इस उत्तर छायावादी– इलियट, एजरा पाउंड वाले काव्याबोध का संघर्ष है।''6 उन्होंने आत्मा की 'हाय' और दीनता की 'काय' उसके 'दाय' को उघार कर रख दिया है। शमशेर की काव्य– चेतना में अद्वैतवादी चिन्तन–दर्षन है।

किन्तु यह अद्वैतवाद वेदान्त का अद्वैतवाद नहीं है, यह वैज्ञानिक अवधारणाओं के अनुकूल है। कवि के काव्य–बिम्ब और प्रतीक जिन वैज्ञानिक अवधारणाओं की ओर सूक्ष्म संकेत करते हैं। वे अस्तित्तवादी–चिन्तन से अलग मानवीय द्रष्टिकोण को लिए हैं। उसमें गहरी समाज–दष्टि है। सार्त्र और किर्केगार्द के अस्तित्ववाद से तत्कालीन अधिकांष कवि प्रभावित थे। पर शमषेर उनसे अलग थे। उनका अस्तित्ववाद उनका आत्म संघर्ष था। उत्तर–छायावादी काव्य–बोध को लेकर वे मूल्यों की बात करते थे।''7

षमषेर बिम्बों की सादगी का उल्लेख बड़ी सहजता से करते हैं। इनकी कविता में प्रस्तुत–अप्रस्तुत बिम्ब की हल्की–सी प्रकृति और हल्का–सा अवसाद का घुलन है। जो नयी कविता के बिम्ब की खास प्रवृत्ति है। 'धूप कोठरी के आइने में खड़ी' कविता सादगी बिम्ब की महती भूमिका निभाती है –

'' धूप कोठरी के आइने में खड़ी

हंस रही है

एक मधुमक्खी हिलाकर फूल को बहुत नन्हा फूल

उड़ गई

आज बचपन का

उदास मां का मुख

याद आता है।''8

शमशेर मूलतःय थार्थवादी षैली के षिल्पकार हैं। जो कि समाज की सही परख करते हैं। इनकी षैली उपदेषात्मक न होकर कत्यात्यमकता से लैस है –

''सत्य का

रंग क्या

पूछो

एक जनता का

दुःख एक।''9

षमषेर मूलतः मुक्त–छन्द के प्रणयनकार है, इनकी कविताओं में लय, स्वर, ताल, माधूर्य व ओज गुण है। इसके सथा ही अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। तथा कविता वैविध्य रसों से ओप्रोत है। शमशेर मूड' के कवि हैं, किसी विज़न के नहीं' इनके यहां एक छोटी–सी मनःस्थिति है, किसी बड़े दर्षन या जीवन–दृष्टि को रचने का यत्न है। प्रयोगवाद के आगे नयी कविता का मूल स्वर है– सामान्य घटनाओं में सोए हुए स्थापित जीवन की पहचान करना है, जो उदात्त है। वह स्वयं काव्य है। अपने से जीने योग्य है, अनुदान को रचना और जीने योग्य बनाना है । यह नये कवि का वैषिष्टय है। जीवन के अन्दर जनतंत्र को बढाना है। षमषेर की कविता में इसकी अच्छा पहल हुई है।

दिन के चौबीस घंटों और वर्ष के तीन सौ पैसठ दिन की छोटी–बड़ी घटनाओं में जीवन–अबाधगति से प्रभावित हो रहा है। यह विज़न शमषेर के अनेक 'मूड्स' में उभरता है, एक आलोक जो अनेक रंगों में से विकीर्ण होता है, और नयी कविता क॓ समूचे परिद॒ष्य में धीमे से घुल जाता है।

षमषेर नयी कविता के कवि हैं। इन्होंनें नयी कविता को नया आयाम दिया है। षोषक–षोषित के प्रति अपनी आवाज बुलन्द की है। अपनी रचनाओं को जनवादी–दृष्टि में रखकर सृजित किया है। इसका सबसे बड़ा कारण है कि ये कम्युनिस्ट आन्दोलन से जुड़े रहे है। इनके विषय में दूसरे तारसप्तक की भूमिका में विषेष चर्चा हुई है। इन्होंने सत्य को षक्ति के रूप में स्वीकार करते हुए रक्षा के लिए अनेक क्रांति करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। झूठ–सत्य की वकालत बात के माध्यम से करते हैं। कहते हैं कि इसी से मनुष्य के व्यक्तित्व की पहचान होती है। 'बात बोलगी' कविता इस सन्दर्भ में अपनी दस्तावेज प्रस्तुत करती है –

''बात बोलेगी

हम नहीं

भेद खोलेगी

बात ही ।

सत्य का मुख

झूठ की आंखे

क्या देखें।''10

षमषेर, धूमिल की तरह समाज के यथार्थ को खोलते हुऐ कहते हैं कि सत्य ही समाज म॓ सुख, षांति व जनकल्याण लाता है। दीनता और क ंगाली तो भीषण क्रूरता की प्रतीक है। संसार की सबसे बड़ी समस्या भी बनी हुई

है। आज समाज से सच्चे इन्सान नदारद हो गये हैं। उनका दर्षन मुहाल हो गया है। सच्चे इन्सान का मिलना दुर्लभ है। इसी परिप्रेक्ष्य में यह उद्धरण प्रस्तुत है –

''मुझको मिलते है

प्रदीक और कलाकार बहुत, लेकिन इन्सान के दर्षन

हैं मुहाल।''11

शमशेर नयी कविता की रीढ़ हैं। इन्होंने प्रत्यक्षवाद, यथार्थवाद, साम्यवाद जनवाद, सर्वहारावाद, संरचनावाद व विकासवाद का अंकन बड़े मार्मिक एवं चुटीले षब्दों में किया है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहने का संदेष देते हैं –

''द ुःख कढ़ता सनल, झलमल आंख मलता पूर्व स्रोत।

पुनः

पुनः जागती जोत।''12

शमशेर 'नयी कविता' के तकनीकी सम्राट हैं। डॉ. रामदषरथ मिश्र लिखते हैं कि ''षमषेर बहुत सूक्ष्म सौन्दर्य–बोध के कवि हैं। इनमें एजरा पाउन्ड की तकनीकी सौन्दर्य की गहरी पैठ है।''13 इनका षिल्प अद्वितीय है। भाषा आम जनों से संपृक्त है। जिसमें हिन्दी के खड़ी बोली के अतिरिक्त संस्कृत के तद्भव–तत्सम षब्दों का संष्लेषण है, इसके साथ ही अंग्रेजी, अरबी–फारसी के शब्दों का अनयास प्रयोग हुआ है। इनकी भाषिक संरचना एक आंग्ल वैषिष्टय को लेकर कार्य करती है। जो बोलचाल में हिन्दी–उर्दू शब्दों का वास्तविक संष्लेषण करती है। इन्हीं शब्दों का षमषेर ने अपनी कविताओं में प्रयोग किया है। 'कुछ और कविताएं' की भूमिका में लिखते हैं, ''हर भाषा की जान मुहावरा और मुहावरे हिन्दी–उर्दू दोनों के बिल्कुल एक है।''14 मुहावरे और व्याकरण के स्तर पर एक रूपता प्रतीत होती है, तथा बोलचाल के स्तर पर भी। लेकिन दोनों के काव्य भाषाई स्तर पर विभिन्नता से युक्त है ।

इसको स्पष्ट करते हुए शमशेर कहते हैं कि हिन्दी अन्य भाषाओं की तरह बिम्ब और अप्रस्तुत विधान से परिचालित होती है जबकि उर्दू कविता का मुख स्रोत मुहावरा है, जो आमजन की बोलचाल से युक्त रहता है । शमशेर ने दोनो काव्यभाषाओं में अलग–अलग तरह से कविता का सृजन किया है तथा दोनो के वैषिष्टय को सर्जनात्मक स्तर पर घुलामिला दिया है।

दूसरा सप्तक

दूसरा सप्तक सात कवियों का संकलन है जिसका संपादन अज्ञेय द्वारा 1949 में तथा प्रकाशन 1951 में भारतीय ज्ञानपीठ से हुआ।ख, दूसरा सप्तक में भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय एवं धर्मवीर भारती की रचनाएँ संकलित हैं। ख्सूत्र रू–रघु धर्म के लिए नरेश भवानी सिंह ने शकुन्तला को हर लिया,दूसरा सप्तक के कवियों ने समसामयिक काव्य की प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व किया और उनका प्रभाव अपने समय के काव्य पर पड़ा। आज भी अनेक काव्यप्रेमियों में इस संग्रह की कविताएँ आधुनिक हिन्दी कविता के उस रचनाशील दौर की स्मृतियाँ जगाएँगी जब भाषा और अनुभव दोनों में नये प्रयोग एक साथ कर सकना ही कवि–कर्म को सार्थक बनाता था। निस्संदेह ये कविताएँ अपने में तृप्तिकर हैं– उनके लिए जिन्हें अब भी कविता पढ़ने का समय है। साथ ही, इस संग्रह की विचारोत्तेजक और विवादास्पद भूमिका को पढ़ना भी अपने में एक ताजा बौद्धिक अनुभव आज भी है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि शमशेर का आत्मसंघर्ष निजी 'प्राइवेट' रहा है। उसमें अदभूत कषिष है– षमषेर एक ओर प्रणय जीवन के कोमल चित्र प्रस्तुत करते हैं तो दूसरी ओर मध्यवर्गी किसान–मजदूरों के जीवन का चित्र। एक ओर सौन्दर्यवादी–रूपवादी रूझान है तो दूसरी ओर मार्क्सवादी/प्रगतिवादी प्रभाव। एक ओर प्रेमाकुलतासे ओतप्रोत हैं तो दूसरी ओर सामाजिक–दायित्व की भावना सांगोपागवित। एक ओर पंत, बच्चन, नरेन्द्र और अज्ञेय से प्रभावित हैं तो दूसरी ओर निराला, नागार्जुन और मुक्तिबोध की विचारधारा से युक्त हैं।

संदर्भ

1. नयी कविता और अस्तित्ववाद, डॉ.रामविलास शर्मा, प॰. 20

2. ह ंस जून 1947

3. नीला–कुसुम, प्॰. ग

4. दूसरा सप्तक संपादक अज्ञेय, प॰. 86

5. साहित्यिक निबंध संपा. त्रिभ ुवन सिंह, पृ. 1665 6 नयी कविता और अस्तित्ववाद डॉ. रामविलास शर्मा, प॰. 92

6. नील कुसुम/दिनकर, पृ. घ

7. बात बोलेगी संपादक : शमशेर बहादुर सिंह, पृ. 59

8. दोनों ही वर्गो क` कवि अलग–अलग काव्य स्वभाव वाले हैं। ये दोनों विरोधी प्रवृत्तियां शमशेर के काव्य में एक साथ दिखाई पडती है। इसके साथ ही इनके काव्य में सामाजिक–राजन ैतिक यथार्थ का वर्णन है, और भाषा हिन्दी–उर्दू के पुटों से लैस है। इनके काव्य में नये बिम्ब, भावबोध, राग–रूप, गुण, रस और अलंकारों का सुन्दर प्रयोग मिलता है। ये सभी विषेषता नयी कविता के कारण आयी है।

9. सम्प्रति हम कह सकते हैं कि कविवर षमषेर निःसंदेह रूप से नयी कविता के मूर्धन्य हस्ताक्षर हैं। इनका षिल्प वैषिष्ट ्य अद्वितीय है। ये नयी कविता क` कवि हैं, किसी धारा के कवि नहीं। नयी कविता की अमूल्य निधि हैं।

10. कुछ कविताएं संपादक शमशेर बहादुर सिंह, प॰. 41

11. कुछ और कविताएं : संपादक शमशेर बहादुर सिंह, पृ. 39

12. छायावादोत्तर काव्य–संग्रह : एस.एन.नवीन अषोक क ुमार घोशा, पृ.21

13. कुछ और कविताएं : संपा. शमशेर बहादुर सिंह भूमिका, पृ. 6

14. कुछ और कविताएं : शमशेर बहादुर सिंह, भूमिका, पृ. 37

15. बात बोलेगी : संपा. शमशेर बहादुर सिंह, पृ.59